जीवराज जैन ग्रंथमाला का परिचय

सोलापुर निवासी श्रीमान् स्व. ब्र जीवराज गौतमचंद दोशी कई वर्षोंसे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें अपनी वृत्ति लगाते रहे। सन १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी कि अपनी न्यायोपार्जित संपत्तिका उपयोग विशेषरूपसे धर्म और समाजकी उन्नतिके कार्यमें करें। तदनुसार उन्होने समस्त भारतका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे इस बातकी साक्षात् और लिखित संमतियां संग्रह कीं कि कौनसे कार्यमें संपत्तिका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसंचय कर लेनेके पश्चात् सन १९४१ के ग्रीष्म कालमें ब्रह्मचारीजीने श्री सिद्धक्षेत्र गजपंथकी पवित्र भूमिपर विद्वानोंकी समाज एकत्रित की और ऊहापोहपूर्वक निर्णयके लिए उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत् संमेलनके फलस्वरूप ब्रह्मचारीजीने जैन संस्कृति तथा साहित्य के समस्त अंगोके संरक्षण, उद्धार और प्रचारके हेतु **'जैन संस्कृति संरक्षक संघ'** नामक संस्थाकी स्थापना की और उसके लिए ३०,००० (तीस हजार) रुपयोंके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रह निवृत्ति बढती गई। सन १९४४ में उन्होने लगभग २००००० (दो लाख) की अपनी संपूर्ण संपत्ति संघको ट्रस्टरूपसे अर्पण की। इसी संघ के अंतर्गत **'जीवराज जैन ग्रंथमाला'** का संचलन हो रहा है।

आजतक इस ग्रंथमालासे हिंदी विभागमें करीब ४८ ग्रंथ, मराठी विभागमें १०२ ग्रंथ तथा धवला विभागमें १६ ग्रंथ छप चुके हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ **श्री श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचंद्र जैन साहित्योद्धारक सिद्धांत ग्रंथमालाके** द्वारा अधिकार प्राप्त **जीवराज जैन ग्रंथमालाका द्वितीय** पुष्प है।

रतनचंद सखाराम शहा.

मंत्री

जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर

विश्वस्त मंडल

श्री. अरविंद रावजी दोशी	श्री. रतनचंद सखाराम शहा
श्री. भाऊसाहेब आमीचंद गांधी	डॉ. सौ. त्रिशलादेवी अ. नाडगौडा पाटील